मासिक
अक्षर वार्ता
RNI No. MPHIN/2004/14249
वर्ष - 20 अंक - 8
(जून - 2024)
Vol - XX Issue No - VIII
(June - 2024)
मूल्य: 100 /- रूपये
डाक पंजीयन क्र. मालवा डिवीजन - L2/65/RNP/399/2024-2026

कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड एवं पियर रिव्यूड शोध पत्रिका

8.0
IMPACT FACTOR

Indexed in International Impact Factor Services (IIFS) Database and Indexed with IJIF
Indexed in the International Institute of Organized Research (I2OR) Database
Monthly International, Refereed Journal & Peer Reviewed
ISSN - 2349 - 7521 , IMPACT FACTOR - 8.0

» aksharwartajournal@gmail.com » www.facebook.com/aksharwartawebpage » +918989547427

AKSHARWARTA IS registered MSME with Ministry of MSME, Government of India
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

ISSN 2349 - 7521
RNI No. MPHIN/2004/14249

मासिक

अक्षर वार्ता

मूल्यः 100 /- रूपये

MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

वर्ष-20 अंक - 8 , जून- 2024
Vol - XX, Issue No. VIII
June - 2024
Impact Factor - 8.0
aksharwartajournal@gmail.com

Monthly International Refereed & Peer Reviewed Journal

प्रधान संपादक
प्रो. शैलेन्द्रकुमार शर्मा
कुलानुशासक एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मप्र.

संपादक
डॉ. मोहन बैरागी
अक्षरवार्ता अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका

संपादक मंडल

प्रो. जगदीशचन्द्र शर्मा, प्राध्यापक
विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मप्र.
प्रो. राजश्री शर्मा, प्राध्यापक
माधव महाविद्यालय, उज्जैन, मप्र.
प्रो. डी. डी. बेदिया, विभागाध्यक्ष
पं. जवाहर लाल नेहरू व्यवसाय प्रबंध संस्थान, व आईक्यूएसी प्रभारी, विक्रम युनिवर्सिटी, उज्जैन, मप्र.
डॉ. शशि रंजन 'अकेला' जनसंपर्क अधिकारी, आरजीपीवी, भोपाल, मप्र.
प्रो. उमापति दिक्षित, प्राध्यापक
केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, उप्र.
प्रो. मोहसिन खान, विभागाध्यक्ष
शासकीय महाविद्यालय, रायगढ़, महाराष्ट्र
डॉ. दिग्विजय शर्मा, सहायक प्राध्यापक
केंद्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, उप्र.
डॉ. भेरूलाल मालवीय, सहायक प्राध्यापक
शा. नवीन महाविद्यालय, शाजापुर, मप्र.
डॉ. उपेन्द्र भार्गव, सहायक प्राध्यापक
महर्षि पाणिनि विश्वविद्यालय, उज्जैन, मप्र.
डॉ. रूपाली सारये, सहा.प्राध्यापक
भाषा विभाग, देवी अहिल्या वि.वि., इंदौर
डॉ. अवनीश कुमार अस्थाना, एसो. प्रोफेसर,
डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम वि.वि, इंदौर, मप्र.
डॉ. पराक्रम सिंह, के.हि.सं., दिल्ली

विशेषज्ञ समिति

डॉ. सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' (नार्वे),
श्री शेर बहादुर सिंह (यूएसए), डॉ. रामदेव धुरंधर (मॉरीशस),
डॉ. स्नेह ठाकुर (कनाडा) डॉ. जय वर्मा (यू.के.), प्रो. गुणशेखर गंगाप्रसाद शर्मा (चीन), डॉ. अलका धनपत (मॉरीशस),
प्रो. टी. जी. प्रभाशंकर प्रेमी (बैंगलुरू), प्रो. अब्दुल अलीम (अलीगढ़), प्रो. आरसु (कालिकट), डॉ. रवि शर्मा (दिल्ली),
डॉ. सुधीर सोनी (जयपुर), डॉ. अनिल सिंह (मुंबई),
डॉ. तुलसीदास परौहा, महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय, उज्जैन, मप्र.

आवरण चित्र - इंटरनेट से साभार

सह संपादक

डॉ. उषा श्रीवास्तव (कर्नाटक), डॉ. मधुकांता समाधिया
(उत्तर प्रदेश), डॉ. अनिल जूनवाल (मप्र), डॉ. प्रणु शुक्ला (राजस्थान), डॉ. मनीष कुमार मिश्रा (मुम्बई/वाराणसी), डॉ. पवन व्यास (उड़ीसा), डॉ. गोविंद नंदाणिया (गुजरात), डॉ. रत्ना कुशवाह, (अंडमान निकोबाद), प्रो. डॉ. किरण खन्ना (अमृतसर, पंजाब)

नोट :- अक्षरवार्ता में सभी पद मानद व अवैतनिक है।/ शोध पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों में लेखकों के अपने विचार है, संपादक मंडल का इससे सहमत होना आवश्यक नही हैं।

Peer Review Board/Committee

1. **Dr. Shalini Gupta, Asasistant Professor,ovt. Ganesh Shankar Vidyarthi College,Mungaoli,Ashoknagar ,MP**
2. **Dr. Jaseedha K., Associate Professor, Keral University, Kerala**
3. **Dr. B. Nanda Jagrit, Govt. Collage, Rajnandgaon, C.G.**
4. **Vandana Singh Yadav, Maharaja Agrasen Himalayan Garhwal University, Uttarakhand**
5. **Dr. Mukesh Chandra Dwivedi, Principal, RSGU PG College Pukhrayan Kanpur Dehat, 209111**
6. **Dr. Sandip Gorakh Salve, Assistant Professor, MSS College, ambad, Jalna, Maharashtra**
7. **Dr. PRABHA CHOUDHARY,Jawahar Inter College, Rardhana, Meerut**
8. **Dr. APARNA U NAIR,St. XAVIER'S COLLEGE VAIKOM, KOTHAVARA, KOTTAYAM**
9. **Dr. Bhawna shrivas,Govt geetanjali girls p g College Bhopal Madhya Pradesh**
10. **Dr. Neelakshi Joshi, Professor, LSM Campur, Pithou\ragardh, Uttarakhand**
11. **Dr. Omprakash Prajapati, Assistant Professor, Himachal Pradesh Kendriya University, Kangda, H.P.**
12. **Dr Radhika Devi,A.K.P (P.G) COLLEGE KHURJA BULANDSHAHR**
13. **Rashmi pandey,Atal bihari vajpayee University bilaspur Chhattisgarh**
14. **Dr. Preeti Vajappe, Associate Professor, Govt. Degree Collage, Sitapur, U.P.**
15. **Dr. Mithlesh Kumari, Associate Professor, K.A. PG Collage, Kasganj, U.P**
16. **Dr. Archana Singh, Professor, Arya Kanya Degree College, Pragraj, U.P.**
17. **Dr. Renu rajesh, Professor, Govt. Nehru PG College, Ashoknagar, M.P.**
18. **Dr. Kiran Baderiya, Assistant Professor, Govt. Madhav College, Ujjain, M.P.**
19. **Dr. C.P. Raju, HOD, St. Aloysius College, Elthuruth, Trissur, Kerala**
20. **Dr. Ramdeen Tyagi, Producer, MCRPV, Bhopal**
21. **Dr. Shashikala Yadav, Yogacharya, yogacharya, Dewas, M.P.**
22. **Rajan Kumar Chaturvedi, Umaria, U.P.**
23. **Dr. Ambika Prasad Pandey, Assistant Professor, Thakur Harnarayan SIngh college, Prayagraj, U.P.**
24. **Dr. Anju Sihare, Asst. Professor, Govt. Collage, Pichor, shivpuri, M.P.**
25. **Dr. Atul Gupta, Asst. Professor, Govt. Collage, Ashoknagar, M.P.**
26. **Dr. Sultana Parveen, Assistant Professor, M.K. College, Panki, Jharkhand**

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, मप्र. से शोध, प्रकाशन, सेमीनार, संगोष्ठी, अवार्ड आदि के लिए अक्षर वार्ता अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिका एवं संस्था कृष्ण बसंती शैक्षणिक एवं सामाजिक जनकल्याण समिति, उज्जैन, मप्र. एम ओ यू हस्ताक्षरित।

» विवेक से आनन्द : स्वामी विवेकानन्द की रचनात्मक मनोभूमि
डॉ. बुद्धदेव प्रसाद सिंह 07
» गुरू गोविंद सिंह और उनके निहंग योद्धाओं का श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति संग्राम में योगदान
डॉ. रजत गंगवार 14
» भीष्म साहनी का अनुवाद-कर्म
सुनील कुमार पटेल 16
» भारत की आर्थिक प्रगति में किसान का योगदान
डॉ. पवन कुमार त्रिवेदी 19
» सांस्कृतिक जागरण के अग्रदूत : कवि रामधारी सिंह दिनकर
चंद्रकांत सिंह 22
» भारतीय संस्कृति और स्त्री
डॉ. तुल्या कुमारी 25
» श्रीमद्भगवद्गीता में संचार के रूप में शंख का प्रयोग
रवि प्रकाश 28
» अवतारवाद को लेकर कबीर की सामाजिक वेदना "दस अवतार निरंजन कहिए सो अपना न कोई।"
डॉ. रामायण प्रसाद टण्डन 30
» शैलेश मटियानी के उपन्यासों में पारिवारिक जीवन
पवन कुमार 32
» हिन्दी उपन्यासों में दिव्यांगों की सामाजिक उपेक्षा
राधा देवी 34
» राष्ट्र के निर्माण में रिपोर्ताज की भूमिका
कोकिला कुमारी 36
» भारतीय जनजाति कला में भीलों के प्रतीक और देवलोक
सोमेश कुमार सोनी 38
» शैक्षिक सम्प्राप्ति में समुदाय एवं शिक्षकों की भूमिका : एक अध्ययन
राजन लाल 40
» हिंदी के विकास में अमेरिकी प्रवासी भारतीयों का योगदान
भावना, डॉ. गीता पाण्डेय 43
» इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कहानियों में स्त्री विमर्श
डॉ. बुद्धमती यादव, रवि कुमार सेहरा 46
» राजनय, राजधर्म और प्रशासन : वाल्मीकीय रामायण के परिप्रेक्ष्य में
डॉ. पवनकुमार शर्मा 48
» प्रवासी हिंदी साहित्यकार और प्रवासी साहित्य की अवधारणा
हरि प्रसाद गौतम, डॉ. नीशी राघव 51
» डॉ. शिवप्रसाद सिंह के कथा साहित्य में जीवन मूल्य चिन्तन
डॉ. सौरभ यादव 55
» स्वतंत्रता आन्दोलन के बाद भू-धृति तथा राजस्व नीति (1858-1869)
डॉ. अरूण कुमार सिंह 58
» वर्तमान परिदृश्य और संत कबीर की प्रासंगिकता
डॉ. मिथलेश कुमारी 61
» 'लोरिकायन' लोकगाथा का सांस्कृतिक विवेचन
अखिलेश कुमार मौर्य, प्रो. परितोष कुमार मणि 63
» माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शैक्षिक प्रशासन के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन
रूपेश कुमार, डॉ. ज्योति पाण्डेय 67
» इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में महानगरीय संस्कृति
नीतीश कुमार 69
» रामधारी सिंह दिवाकर की कहानियों में ग्रामीण जीवन का यथार्थ
सुनील कुमार, डॉ. चन्दन कुमार 72
» कन्यादान : शास्त्रीय पहलू और आधुनिक परिप्रेक्ष्य में बदलते स्वरूप का औचित्य
विमला भावनानी 'विभा' 74
» 'जॉर्ज पंचम की नाक' कहानी संग्रह में व्यंग्य का अनुशीलन
प्रज्योत पांडुरंग गावकर 77
» बाल-काव्य में नैतिक मूल्य
अर्जित पाण्डेय, डॉ. अरविन्द सिंह 80
» कमलेश्वर के कथा साहित्य पर आधारित चलचित्रों में बदलते जीवन-मूल्य
प्रमोद कुमार वर्मा, डॉ. युवराज सिंह 83
» गौतम बुद्ध के नैतिक-दर्शन की प्रासंगिकता
डॉ. सुषमा कुमारी 86
» नयी कहानी में पति-पत्नी सम्बन्ध का तनाव (मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव और कमलेश्वर की कहानियों के सन्दर्भ)
दीनानाथ गुप्ता 89
» भारत के स्वाधीनता आन्दोलन में हिन्दी भाषा की भूमिका : असम के सन्दर्भ में
डॉ. साइफुल इस्लाम 92
» महिला कहानीकारों की कहानियों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक यथार्थ : संदर्भ नई कहानी
सचिन टोपनो 95
» दलित चेतना का स्वर
डॉ. नमिता जैन, नमिता 98
» अलका सरावगी के उपन्यासों में ग्रामीण समाज में स्त्री-पुरूष
कविता कोठारी 101

» "21 वीं सदी में 'यमदीप' उपन्यास में चित्रित किन्नर विमर्श"
दिनेश कुमार, डॉ. आनंद सिंदल 105
» संगीत का आध्यात्मिक दृष्टिकोण
डॉ. शैलजा मिश्रा 108
» स्त्री पीड़ा की अभिव्यक्ति - 'एक पत्नी के नोट्स'
श्रीमती मेनुका श्रीवास्तव, डॉ. सियाराम शर्मा 110
» मध्यकालीन निर्गुण संत कवियों के काव्य में सामाजिक विषमता के प्रति विद्रोह
प्रियंका सिंह 112
» 'कविता शगल नहीं साधना है'
गौरव गौतम 116
» हिंदी का संरचनात्मक अध्ययन
डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति 118
» An Overview Of Cement Sector of Rajasthan
Nisha Meena, Dr. Premila Jain 121
» Environmental Peace and Sustainable Development through Teaching's of Bhagvad Gita
Dr. Pawan 124
» Category and Agency wise perform ance of mudra yojna : An Appraisal
Rajshree 127
» Gender Dynamics in the Indian Social System : A Comprehensive Overview
Krishna Pratap Singh
Durgesh Dhar Dwivedi 132

शोध आलेख प्रकाशन संबंधी नियम

शोध आलेख 2500 से 5000 शब्दों का होकर यूनिकोड मंगल अथवा कृतिदेव 10 में 12 के फॉन्ट साइज में ही भेजें। शोध आलेख एपीए एमएलए फार्मेट में होना आवश्यक होकर फुटनोट व रिफ्रेंसेस के साथ भेजना आवश्यक है। अंग्रेजी माध्यम के शोध-पत्र टाईम्स न्यु रोमन (Times New Roman) ,एरियल फोंट (Arial) में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में अक्षरवार्ता के ईमेल पर भेजने के बाद हार्ड कॉपी तथा शोध-पत्र मौलिक होने के घोषणा-पत्र के साथ हस्ताक्षर कर अक्षरवार्ता के कार्यालय को प्रेषित करें।

पुस्तकों से संदर्भ देने के लिए क्रम

लेखक का अंतिम नाम (सरनेम), पहला नाम; पुस्तक का शीर्षक (इटैलिक्स में; प्रकाशक का नाम और पूरा पता (प्रकाशन का वर्ष) कोष्ठक में; पृष्ठ संख्या ....।

द्विवेदी,हजारी प्रसाद, कबीर, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, चौदहवीं आवृति, 2014, पृ. 108

पत्रिकाओं के संदर्भ

लेखक का अंतिम नाम (सरनेम), पहला नाम। लेख का शीर्षक। जर्नल का शीर्षक/नाम (इटैलिक्स में)। वॉल्यूम। संस्करण (महिना, वर्ष): पृष्ठ संख्या। प्रकाशन मीडिया।

वेबसाइट के उद्धरण का प्रारूप

लेखक का अंतिम नाम (सरनेम), पहला नाम। ''पृष्ठ का शीर्षक।''
क्षेत्र शीर्षक। (साईट) प्रकाशित करने वाली कंपनी। (युआरएल) तथा सर्च डेट (अभिगमन तिथि)।
पुस्तक, पत्रिका, आवधिक, वेबसाइट आदि) के शीर्षक को इटैलिक में लिखें।
शोध आलेख के साथ प्लेगरिज़्म रिपोर्ट / स्व घोषणा पत्र (आलेख की मौलिकता व अप्रकाशित होने के संदर्भ में) अवश्य भेजें।
आलेख की वर्ड और पीडीएफ दोनों फाइल् अनिवार्य रूप से भेजें।
शोध आलेख प्रत्येक माह की 7 तारीख तक आगामी माह के अंक के लिए स्वीकार्य होंगे।
शोध आलेख का प्रकाशन रिव्यू कमेटी द्वारा अनुसंशा के आधार पर किया जावेगा।

अक्षर वार्ता
अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2349-7521, Impact Factor - 8.0
Vol - XX, Issue - VIII, June - 2024
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021
"AKSHARWARTA" Monthly International Refereed Journal

हिंदी का संरचनात्मक अध्ययन

डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति

सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, जिला–काँगड़ा, हिमाचल प्रदेश

'संरचना' का अभिप्राय है निर्माण की प्रक्रिया। पौधे के रूप में पैदा होकर, वृक्ष के तने और शाखाओं–उपशाखाओं के रूप में विकसित होती है। यह उसकी संरचना नहीं। उस लकड़ी के छोटे–छोटे बड़े खंडों को जोड़कर मेज, कुर्सी, आलमारी आदि का जो रूप दिया जाता है वह उसकी संरचना है। उस संरचना में विभिन्न काष्ठ–खंड किसी विशेष व्यवस्था और रचना नियमों के अनुसार एक दूसरे से जुड़कर एक उपयोगी रूप धारण करते हैं। इस प्रकार विभिन्न खंडों के संयोग, सम्मिश्रण, संयोजन से विभिन्न आकृतियों की संरचना होती है। भाषा–संरचना में भी यही प्रक्रिया दिखाई देती है। भाषा की संरचना में ध्वनि, रूप, शब्दह, वाक्य आदि का परस्पिर संबंध अैर संयोजन होता है। भाषा की आधार इकाई ध्वनि है। ध्वनियाँ जब व्यवस्थित क्रम से संग्रहीत होते हैं तभी शब्दों की संरचना होती है। शब्द किसी अवस्थित क्रम से संयोजितहोते हैं,तभी उनसे संरचित वाक्य सार्थक समझा जाएगा। अतः संरचनाका अभिप्राय व्यवस्थित निर्माण की प्रक्रियाहै। 'लिखता' और 'पुस्तक' शब्दों में वही ध्वनियाँ एक निश्चित'व्यवस्था' में आबद्ध होती है और इसी कारण शब्द का बोध होता है। परंतु इसमें स्वीकृत परंपरागत भाषा नियमों का पालन होता है। इस प्रकार संरचना से अभिप्राय भाषा के उस रूप से है जो एक भौतिक प्रक्रिया के रूप में हमारे वाग्यंत्र से उच्चरित होकर, हमारी श्रवणेद्रिय द्वारा ग्रहीत होता है।

इस प्रकार संरचना का स्तार ध्वेनि से प्रोक्ति तक जाता है; जैसे– ध्वनि –? रूप (शब्दग या पद) – पदबंध – उपवाक्यव – वाक्यत – प्रोक्ति। इसका संक्षिप्त विवेचन इस प्रकार है– ध्वनिपरक: ध्वनि भाषा की लघुत्तम इकाई है जो सार्थक न होते हुए शब्द के निर्माण में अर्थ भेदक होती हैं। 'ध्वनि वह लघुत्तम भाषिक इकाई है जिसके और खंड नहीं हो सकते' हिंदी में स्वर और व्यंजन होते हैं

(1) **स्वर:** मुख से स्वघरों का उच्चाकरण बिना किसी बाधा के होता है। हिंदी के अपने दस स्वर हैं– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ। इसमें संस्कृत के 'ऋ' स्वर को भी सम्मिलित कर लिया गया है जो केवल संस्कृत के आगत शब्दों में प्रयुक्त होता है। हिंदी में इसका व्यंजनवत् उच्चारण होता है। इसी प्रकार अंग्रेजी के आगत शब्दों् हॉल, डॉक्टर आदि में 'ऑ' ध्वनि पाई जाती है जिसको हिंदी में स्वीकार कर लिया गया है। इस प्रकार हिंदी के कुल बारह स्वर होते हैं– अ, आ,ऑ,इ, ई, उ, ऊ, ऋ ए, ऐ, ओ, औ।

(2) **व्यंजन:** व्यंजन ध्वनियों के उच्चारण में या तो मुँह बंद होकर खुलता है या मुख विवर के मध्य रेखा में जीभ ऐसी रुकावट डालती है कि हवा को बगल से निकालना प?ता है। अतः हवा को जिस स्थान पर रोका जाता है, उसे उच्चरित ध्वनि का स्थान कहते हैं और जिस उच्चारण अवयव के द्वारा हवा उस स्थान पर रुकती है उसे करण कहा जाता है। व्यंजनों का उच्चारण स्थान, प्रयत्ना स्वरंतत्रियों की स्थिति और प्राणत्व के आधार पर होता है। इस प्रकार मूल व्यंजनों की संख्या 33 है और संयुक्त व्यंजन क्ष, त्र, ज्ञ तीन हैं। इस प्रकार परंपरागत वर्णमाला में 36 व्यंजन हैं इसके अतिरिक्त कुछ विद्वान द्य (द्+य), द्व (द्+व) और द्ध (द्+ध) श्र (श्+र) चार सयुंक्त व्यंजन और मानते हैं। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि हिंदी में 'ज्ञ' संयुक्ताक्षर का उच्चारण 'ग्य' के रूप में होता है। जबकि संस्कृत में 'ज्ञल' के रूप में होता है। आजकल लेखन में ज्ञ, क्ष, त्र को छोड़ कर हिंदी भाषायों के अलावा हिंदीतर भाषियों और विदेशियों की सुविधा के लिए द्य, द्ध, द्व संयुक्ताक्षर का प्रयोग कम होने लगा है और उनको खोल कर (द्+य,द्+व,द्+ध) के रूप में लिखा जाने लगा है। इस समय हिंदी में 'ङ' और 'ञ' का प्रयोग नगण्य हो गया है, क्योंकि इनका स्वतंत्र रूप से प्रयोग नहीं होता। मात्र संस्कृत शब्दों में यह प्रयोग उपलब्ध है। हिंदी की प्रकृति में शब्द के अंत्य स्वर 'अ' का प्रायः लोप हो जाता है, किंतु अंग्रेजी के प्रभाव से हिंदी के कुछ शब्दों में 'अ' स्वर का आगम भी हुआ है, जैसे– योग (योगा), रामकृष्ण (रामाकृष्णा)। यह भाषिक भूमंडलीकरण की प्रक्रिया का एक उदाहरण है।

(अ) हिंदी में 'श' और 'ष' का उच्चारण–भेद तो मिलता नहीं है, लेकिन यह संभावना अवश्य है कि श, षऔर स के उच्चारण में अंतर समाप्त हो जाएगा। इसका कारण भूमंडलीकरण में हिंदी का व्यापक प्रयोग हो सकता है।

(ब) भूमंडलीकरण के प्रभाव से जिस प्रकार अंग्रेजी और अन्य भाषाओं के भ्रष्ट व्याकरणिक प्रयोग दिखाई देने लगे हैं, यही स्थिति हिंदी के व्याकरणिक प्रयोग में आने की संभावना भी कुछ विद्वानों को है लेकिन कुछ विद्वान आशान्वित हैं कि अनुवाद और प्रौद्योगिकीके कारण हिंदी को मानक रूप का विकास होगा।

रूपपरक: भाषाविज्ञान में भाषा कीसार्थक इकाई रूपिम को माना जाता है, रूपिम दो प्रकार के होते हैं– मुक्त रूपिम और बद्ध रूपिम। जो रूपिम स्वितंत्र रूप से अपनी सत्ता बनाए होते हैं और वे सार्थक होते हैं, वे मुक्तह रूपिम होते हैं और जो शब्दू अपनी स्वंतंत्र सत्ता न रखकर स्वोतंत्र या अन्यत रूपिम के साथ जुड़ कर अर्थ प्रदान करते है वे बद्ध रूपिम कहलाते हैं। उदाहरण के लिए,'लड़की' शब्द स्वतंत्र रूपिम है किंतु 'लड़कियाँ' शब्द में दो रूपिम हैं–'लड़की' है मुक्तण रूपिम और 'याँ'। बद्ध रूपिम अर्थवान होने के कारण लड़की मुक्तो रूपिम है, किंतु 'याँ' का अपना कोई स्वतंत्र अर्थ नहीं है, लेकिन 'लड़की' के साथ जुड़ जाने के कारण याँमें बहुवचन का अर्थ

मिलता है और इसलिए यह बद्धरूपिम है। मुक्त रूपिम भाषा की स्वतंत्र और अर्थवान इकाई है। बद्ध रूपिम के अंतर्गत परंपरागत दृष्टि से उपसर्ग और प्रत्यय आते हैं।

आधुनिक भाषाविज्ञान में शब्द और उसके अर्थ प्रतिपादन का काफी विवेचन हुआ है। परंपरागत व्याकरणिक सिद्धांत के अंतर्गत शब्द को सर्वोपरि इकाई माना गया है। मुक्त रूपिम ही शब्द है। 'भाषा की सर्जनात्मक बुनावट में शब्द ही आधार है तथा शब्द भाषा का वह पूर्वनिर्मित तत्व है, जिसके आधार पर पदबंध, उपवाक्य, वाक्य इत्यादि बड़े भाषिक खंड निर्मित होते हैं।' शब्द' जब स्वतंत्र रूप से प्रयुक्त होता है तो शब्द कहलाता है। प्रकार्य के धरातल परवाक्य में प्रयुक्त शब्द पद कहलाता है, इसलिए पद वे शब्दरूप हैं, जो वाक्यात्मक गुणों से युक्त होता है। शब्दों या पदों का वर्गीकरण संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय आदि शब्द वर्गों में किया जाता है,

पदबंध: 'वाक्य में प्रयुक्त शब्द पद होता है। कई पदों का समूह पदबंध होता है। यह पदबंध भाषा की स्वतंत्र और सार्थक इकाई के रूप में काम करता है,जिसमें एक से अधिक पद परस्पर संबद्ध रहते हैं। यह वाक्य का एक अंश है जो स्वयं पद की भाँति वाक्य में प्रयुक्त होता है। पदबंध को वाक्यांश भी कहते हैं।' इस प्रकार कई पदों के योग से बने हुए वाक्यांश कोजो एक ही पद का काम करता है, पदबंध कहते हैं। पदबंध पाँच प्रकार के होते हैं, जो इस प्रकार हैं-

पद	पदबंध
लड़का	मेधावी लड़का, कक्षा का सबसे मेधावी लड़का (संज्ञा पदबंध)
वह	सब को अच्छा लगने वाला वह (व्यक्ति) (सर्वनाम पदबंध)
बलवान	बहुत बलवान, बहुत बड़ा बलवान (विशेषण पदबंध)
बाहर	घर के बाहर, नए मकान के बाहर (क्रिया विशेषण पदबंध)
चला	चला गया, चलते जा रहा था। (क्रिया पदबंध)

पदबंधों का जो शीर्ष या अंतिम पद होगा, वही पदबंध होगा। पदबंध का अंतिम पद यदि संज्ञा हो तो वह संज्ञा पदबंध होगा। इसी प्रकार यदि अंतिम पद विशेषण है तो विशेषण पदबंध होगा। क्रिया पदबंध में मुख्य क्रिया प्रथम पद होती है।

वाक्यपरक: भाषा में वाक्य का महत्वपूर्ण स्थान है। वाक्य परस्पर संबद्ध शब्दों के प्रयोगसम्मत अनुक्रम का ही नाम है, जिसमें पूर्ण अर्थ देने की शक्ति होती है।उसमें प्रसंगानुसार भाव का बोध कराने की क्षमता होती है। इसमें व्याकरण तथा प्रतीति की दृष्टि से कोई असंगति नहीं होती। उदाहरण के लिए,राम ने रावण को बाण से मारा यह एक अर्थयुक्त पूर्ण वाक्य है। वस्तुतः वाक्य वह संरचनात्मक तथा व्यवस्थित लड़ दो बातें मुख्य रूप से रखी गई हैं- (क) अन्वय या अन्विति, (ख) पदक्रम। इससे वाक्यों में एक निश्चित व्यवस्था देखने को मिलती है। हिंदी वाक्या में 'कर्ता-कर्मद्ध का क्रम होता है।

प्रोक्तिपरक: आज तकवाक्य को भाषा की महत्तम इकाई माना जाता रहा है। लेकिन आधुनिक भाषाविज्ञान ने वाक्य से ऊपर की इकाई का अध्ययन करने पर बल दिया,क्योंकि विचारों के आदान-प्रदान के लिए मात्र वाक्य अपनेआप में पूर्ण नहीं होता। 'पूर्ण संप्रेषण के लिए वाक्य की सीमा को पार करना पड़ता है। भाषा का मूल व्यापार संप्रेषण है और संप्रेषण से अभिप्राय वक्ता का मंतव्य, उस मंतव्य को भाषिक अभिव्यक्त देना और उस अभिव्यक्ति से श्रोता द्वारा वक्ता के मंतव्य को समझना है।' लेकिन कई बार संप्रेषण वाक्य से संभव नहीं हो सकता और इसलिए वाक्य को भाषा की महत्तम इकाई नहीं माना जा सकता। प्राचीन काल में प्रयुक्त महावाक्य को आज 'प्रोक्ति'कहा जाता है। इस प्रकार 'प्रोक्ति वाक्योपरि स्तर की एक ऐसी इकाई है जिसके कथ्य में आंतरिक संसक्ति तथा वाक्यों में संदर्भपरक और अर्थपरक अनुक्रम रहता है।' इसका एक उदाहरण दिया जा रहा है- मोहन रात को शहर से अपने गाँव आ रहा था। उसे रात के अंधेरे में एक व्यक्ति ने पकड़ लिया। उस व्यक्ति ने मोहन से पैसे, घड़ी आदि सभी चीजें देने को कहा लेकिन सभी चीजें न देने पर व्यक्ति ने गोली मारने की धमकी दी। वह अपनी सहायता के लिए चिल्लाया तभी दूसरी ओर से एक पुलिस वैन आ रही थी। पुलिस वैन आवाज सुनकर उस स्थल पर आई, और उसे बचा लिया तथा उस व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया।

इस अनुच्छेद में आठ वाक्य हैं। उनमें नियमितता है और वे एक इकाई या अनुच्छेद के रूप में परस्पर जुड़े हुए हैं। इन वाक्यों का एक ही संदेश है मोहन रात को शहर से अपने गाँव आ रहा था' उसे रात के अंधेरे में एक व्यक्ति ने पकड़ लिया' उस व्यक्ति ने मोहन से पैसे, घड़ी आदि सभी चीजें देने को कहा। इस वाक्योपरि स्तर की इकाई में 'वह, उसे आदि सर्वनाम वाक्यों को एक दूसरे से जोड़ रहे हैं। इस प्रकार पुलिस वेन ने उसे बचा लिया और उस व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया। 'संदेश का संप्रेषण' इस इकाई के संदर्भपरक और तर्कपूर्ण अनुक्रम में आए वाक्यों से हो रहा है। संदेश की आंतरिक संरचना और भाषिक इकाइयों की अन्विति से ये वाक्य एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

इसलिए ''प्रोक्ति को उसके आकार से नहीं, प्रकार्य से जोड़ा जाता है। एक वाक्य से लेकर अनुच्छेद, अध्याय और यहाँ तक कि संपूर्ण कृति तक भी प्रोक्ति हो सकती है। कभी-कभी एक शब्द भी प्रोक्ति की भूमिका निभाता है।' दूसरे शब्दों में, कोई भी कृति विशिष्ट अर्थ में एक प्रकार की प्रोक्ति है और उसमें पाई जाने वाली पूर्ण इकाइयाँ भी प्रोक्ति कहलाएँगी। उनमें अंतर केवल स्तर का रहता है। इस प्रकार प्रोक्ति संप्रेषण व्यापार की एक व्यवस्थित इकाई है। इसमें भाषिक रूपों और संप्रेषणात्मक प्रकायों के बीच साम्य बना रहता है।

अर्थपरक: अर्थ शब्द की ऐसी आंतरिक शक्ति है, जो शब्द के उच्चारण करते ही उस वस्तु की प्रतीति कराती है जिसके संदर्भ या प्रकरण में कोई शब्द बोला या लिखा जाता है। जब हम 'पुस्तक' शब्द का उच्चारण करते हैं तो श्रोता के मानस पटल पर 'पुस्तककी छवि' उभर आती है। 'पुस्तक' शब्द का ही अर्थ 'पुस्तंक की छवि' है। सामान्यतया हम मानते हैं कि 'शब्द' ध्वनि रूप होता है और अर्थ उसका 'वस्तु' रूप। परंतु व्याकरण ऐसा नहीं मानते। उनकी मान्यता है कि शब्द और अर्थ दोनों अमूर्त हैं और मनुष्य के मन में संस्कार रूप में विद्यमान रहते हैं।भाषिक प्रतीकों द्वारा जो भी संप्रेष्य है, अभिव्यक्ति का जो संप्रेषण मूल्य है, उसे अर्थ क्षेत्र के भीतर लिया जा सकता है। कुछ विद्वानों अर्थ के चार प्रकार माने हैं-

संकेतार्थ, संरचनार्थ, प्रयोगार्थ और संपृक्ता र्थ। इसका विस्तृपत विवेचन शब्दथ-संपदा उपशीर्षक में किया गया है।

4. 2 शब्द संपदा:-समाज परिवर्तनशील है। इसीलिए समय-समय पर सामाजिक व्यवहार और सांस्कृतिक-मूल्यों में परिवर्तन आते रहते हैं। इन परिवर्तनों के साथ नई-नई वस्तुओं का आविष्कार होता है तथा नई-नई

संकल्पकनाएँ उद्भूत होती हैं। इन संकल्पनाओं और वस्तुओं के लिए या तो नए शब्दों का आगमन होता है या पुराने शब्दों के अर्थ का संस्कार होता है। प्राचीनकाल में संस्कृति के प्रत्येक परिवर्तन को व्यंजित करने में सक्षम रहता है। प्राचीन काल में संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश से हिंदी का विस्तार हुआ तो मध्यकाल में मुसलमानी राज्यों के साथ संपर्क होने के कारण फारसी-अरबी के कई शब्दों में वृद्धि हुई। जैसे-गुलाब,जलेबी, तंदूर, तकिया, मुबारक, मसाला, मुकदमा, सुराही, मुरब्बा, जायदाद, जमानत। आधुनिक काल में यूरोपीय संपर्क से एडवोकेट, अपील, मिशनरी, जूरी, पेंशन, प्लेटफार्म, वाटर, कोट, सिगरेट, रेडियो, सिनेमा, बस आदि नए शब्द आए तो समाजवाद, पूँजीवाद आदि नई संकल्पनाओं के साथ नए शब्द भी गृहीत किए गए।

किसी भाषा में प्रयुक्त सभी शब्दों के भंडार को उस भाषा की शब्द-संपदा या शब्द-भंडार अथवाशब्द संसार कहते हैं। शब्द-संपदा किसी बोली की भी हो सकती है, किसी व्यक्ति की भी, किसी साहित्यिक धारा की भी और किसी भाषा या साहित्य के काल की भी। भाषा का व्याकरण उसके बोलने वालों के तर्कपूर्ण चिंतन की अभिव्यक्ति करता है और उनकी शब्द-संपदा में भी परिवर्तन होता रहता है। शब्दों के कई प्रकार हो सकते हैं। इन प्रकारों या भेदों का विवेचन ऐतिहासिक आधार पर,रचना के आधार पर,प्रयोग के आधार पर किया जा सकता है।

(क) पारिभाषिक शब्द (ख) अर्द्ध पारिभाषिक शब्द (ग) सामान्य शब्द।

(क) पारिभाषिक शब्द : पारिभाषिक शब्द में संकल्पना और यथार्थ वस्तु निश्चित होती है और यह स्वयंसिद्ध होती है। इसके प्रयोग में सैद्धांतिक परिवेश का बोध होता है। विशिष्ट प्रयोजन के भाषा-रूपों अर्थात भौतिकी, रासायनिकी, इंजीनियरी, मेडिकल, दर्शन, गणित, विधि, प्रशासन आदि विषयों के बाद सुनिश्चित अर्थ लिए होते हैं और उनमें एकार्थकता होती है।

(ख) अर्द्ध पारिभाषिक शब्द: वे शब्द जो सामान्य भाषा के साथ-साथ पारिभाषिक शब्द के रूप में भी प्रयुक्त होते हैं। जैसे- दावा (कानून में भी), स्वर (व्याकरण में भी), धातु (विज्ञान में भी), स्वीकृति (कार्यालय में भी)।

(ग) सामान्य शब्द: वे शब्द जो सामान्य बोल चाल की भाषा में प्रयुक्त होते हैं, जैसे- मकान, पानी, खाना, पीना, घूमना।

अर्थ के आधार पर: किसी शब्द को सुनकर या पड़कर जो मानसिक प्रतीति होती है, वह अर्थ है। वास्तव में मानसिक संकल्पना का संबंध यथार्थवस्तु से होता है। उसके साथ सामाजिक, सांस्कृतिक, परंपरागत, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक संबंध भी जुड़ होते हैं जिनके कारण शब्द में अर्थ की अगाध संभावनाएँ निहित रहती हैं। सुविधा के लिए अर्थ को छह प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है-बोधात्मक, संरचनात्मक, लक्षणात्मक, व्यंजनापरक, व्याकरणिक और सामाजिक।

(क) बोधात्मक : किसी शब्द का संबंध यथार्थ वस्तु से हो तो वह उस अर्थ को उसी के अनुसार बोध कराता है। वास्तव में यह उसका मुख्य अर्थ होता है। उदाहरण के लिए, पानी का 'जल', गधा का 'पशु विशेष' कुर्सी का 'चार पाँव वाली बैठने की वस्तु'। इन्हें संकेतार्थ य कोशगत अर्थ भी कहा जा सकता है।

(ख) संरचनात्मक (संरचनार्थ): यह अर्थ संरचना से संकेतित होता है और यह मुख्यतः यौगिक शब्दों से निकलता है। उदाहरण के लिए, 'कमल' के लिए पंकज (पंक+ज) का अर्थ 'कीचड़ से जन्मा हुआ', (निर्धन परिवार से जन्मर कोई महापुरुष)पीतांबर (पीत+अंबर) का अर्थ पीले हैं वस्त्रे जिसके' (कृष्ण) आदि शब्द संरचनात्मक हैं।

(ग) लक्षणात्मकः इसमें बोधात्मक अर्थ पर आधारित कोई अन्य भिन्न अर्थ निकलता है। जैसे 'गधा' कालक्षणात्मक अर्थ 'मूर्ख' और 'शेर' का 'बहादुर' होगा।

(घ) व्यंजनापरक: यह बोधात्मक और लक्षणात्मक अर्थ से आगे होता है, जैसे- 'वह तो महलों के लोग हैं, हम झोपड़ी वालों से क्या काम' में महलों के लोग से व्यंजना 'बड़े या अमीर लोग' है जबकि 'झोपड़ी वालों का व्यंवग्यार्थ' गरीब या छोटे लोग हैं।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि लक्षणात्म क और व्यांजनात्म।क संपृक्तानर्थ के अंतर्गत आते हैं।

(ङ) व्याकरणिक:'ने' को से में, आदि व्याकरणिक शब्द भी अर्थ लिए होते हैं। वे वस्तुत व्याकरणिक कार्य करते हैं और प्रकार्यात्मक अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।

(च) सामाजिक: सामाजिक स्तर भेद के कारण कुछ शब्द सामाजिक अर्थ लिए होते हैं। जैसे- तू, तुम, आप, तीनों मध्यम पुरुष एकवचन सर्वनाम हैं किंतु इनमें सामाजिक अर्थ की दृष्टि से अंतर है। इनके प्रयोग से वक्ता श्रोता के सामाजिक संबंधों की जानकारी मिलती है। इसी प्रकार आना,पधारना बैठनाविराजनातशरीफ रखना आदि में भी सामाजिक अंतर है। इसे प्रयोगार्थ भी कहा जाता है।

हिंदी की शब्द संपदा अत्यंत विस्तृत है। इसमें विभिन्न अर्थच्छटाओं को अभिव्यक्त करने की क्षमता है। तत्सम, तद्भव, विदेशी और देशज शब्दों के अतिरिक्त आंचलिक भाषाओं शब्द समृद्धि भी इसमें अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाए हुए है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि भाषिक भूमंडलीकरण के कारण हिंदी में नए-नए शब्द भी विशेषकर अमेरिकन इंग्लिश से शब्द आए हैं। पहले हिंदी में ब्रिटिश इंग्लिश के शब्द समाहित होते रहते हैं। अब या तो अमेरिकन इंग्लिश के शब्द प्रयुक्त होने लगे हैं, यथा- elevator (lift), diaper (nappy), eraser (rubber), Assistant Professor (Lecturer), Associate Professor (Reader), Cab (ta&i)

संदर्भ सूची :-

1. हिंदी संरचना के विविध पक्ष, अनिल कुमार पाण्डेय, पृ.15
2. हिंदी भाषा संरचना के विविध आयाम,रवींद्र श्रीवास्तव, पृ.106
3. शैक्षिक व्याकरण और व्यावहारिक हिंदी, कृष्ण कुमार गोस्वामी, पृ. 91
4. भाषाविज्ञान, भोला नाथ तिवारी से उद्धृत पृ. 13
5. शैक्षिक व्याकरण और हिंदी,कृष्ण कुमार गोस्वामी,पृ.125
6. अनुवाद विज्ञान की भूमिका, कृष्ण कुमार गोस्वामी,पृ.227